Shri Hanuman Sathika

श्रीहनुमान साठिका

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

किसी समस्या के समाधान एवं साधना सम्बन्धी जानकारी हेतु आप मुझे मेरे ऊपर दिये नम्बर पर फोन कर सकते हैं।

हनुमान चालीसा एवं बजरंग बाण के तुल्य ही हनुमान साठिका का प्रभाव है। सर्वशत्रुओं एवं व्याधियों पर विजय प्राप्ति हेतु इसका प्रयोग किया जाता है। नित्य भक्तिमय त्रिकाल पाठ करने से हनुमानजी अति प्रसन्न होते हैं। साठ पाठ नित्य साठ दिनों तक विधिपूर्वक करने से यह दिव्य पाठ सिद्ध होता है। समस्त यम नियमों का ध्यान रखना अति अनिवार्य है।

।।दोहा।।

बीर बखानौं पवनसुत, जनत सकल जहान।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

धन्य-धन्य अंजनि-तनय, शंकर हर हनुमान।।

।।चौपाई।।

जयजयजय हनुमान अखण्डी।

जयजय महावीर बजरंगी।1।

जय कपीस जय पवन कुमारा।

जय जगबंधन सील अगारा।2।

जय उद्योग अमर अविकारी।

अरिमरदन जयजय गिरधारी।3।

अंजनि उदर जन्म तुम लीना।

जयजयकार देवतन कीना।4।

बाजे दुंदुभि गगन गंभीरा।

सुरमन हरष असुरमन पीरा।5।

कपि के डर गढ़ लंक सकाने।

छूटे बंदी देव सब जाने।6।

रिषय समूह निकट चलि आये।

पवन तनय के पद पर सिर नाये।7।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

बार-बार स्तुति करि नाना।

निरमल नाम धरा हनुमाना।8।

सकल रिषय मिलि अस मत ठाना।

दीन बताय लाल फल खाना।9।

सुत वचन कपि अति हरषाने।

रवि रथ गहे लाल फल जाने।10।

रथ समेत रवि कीन अहारा।

सोर भयउ तहँ अति भयकारा।11।

बिनु तमारि सुनमुनि अकुलाने।

तब कपीसकै स्तुति ठाने।12।

सकल लोक वृतांत सुनावा।

चतुरानन तब रवि ढंगिलावा।13।

कहा बहोरि सुनहु बलसीला।

रामचन्द्र करिहैं बहु लीला।14।

तब तुम तिनकर करब सहाई।

अबहिं रहहु कानन महँ जाई।15।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

अस कहि विधि निज लोक सिधारा।

मिले सखासंग पवनकुमारा।16।

खेलहिं खेल महातरु तोरी।

गली करत परवत मैं फोरी।17।

जेहि गिरि चरण देत कपिराई।

बल सो चमकि रसातल जाई।18।

कपि सुग्रीव बालिकी त्रासा।

निरभय रहेउ राम मगआसा।19।

मिले राम लै पवनकुमारा।

अति आनन्द समीरदुलारा।20।

मनि मुन्दरी रघुपति सौं पाई।

सीता खोज चले कपिराई।21।

सतयोजन जननिधि बिस्तारा।

अगम अपार देवमुनि हारा।22।

बिन श्रम गोखुर सरिस कपीसा।

नांधि गयी कपि कहि जगदीसा।23।

सीता चरण शीश तिन नायौ।

अजर अमर की आशीष दायो।24।

अजर अमर गुन निधि सुत होहू।

करहूँ बहुत रघुनायक छोहू।25।

रहे दनुज उपवन रखवारी।

एक तें एक महाभटभारी।26।

तिन्हें मारि उवपन करि खीसा।

दह्यो लंक कांप्यौ दशसीसा।27।

सिया बोध दे पुनि फिर आयो।

रामचन्द्र के पद सिर नायो।28।

मेरु विशाल आनि पल माँही।

बाँध्यो सिन्धु निमिष इक माँही।29।

भये फन्नीस शक्तिबस जबहीं।

राम विलाप कीन बहु तबहीं।30।

भवन समेत सुखनेहिं लाये।

भूरि सजीवनि कह तब धाये।31।

मगमंह कालिनेमि कह मारा।

अमित सुभट निशिचर संहारा।32।

आनि सजीवन शैल समेता।

धर दीन्यहौ जहँ कृपानिकेता।33।

फन पति केर शोक हरि लीन्हो।

बरषि सुमन सुमन जयजय कीन्हो।34।

अहिरावण हरि अनुज समेता।

लै गो जहाँ पाताल निकेता।35।

तहाँ रहे देवी स्थाना।

दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना।36।

पवन तनय तंह कीन्ह गोहारी।

कटक समेत निशाचर मारी।37।

रिच्छ कीसपति जहाँ बहारी।

रामलखन कीन्हेउ यक ठौरी।38।

सब देवन के बन्दि छोड़ाई।

सोई कीरति नारद मुनि गाई।39।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

अच्छकुमार दनुज बलवाना।

स्वामी केतु कंह सब जग जाना।40।

कुम्भकर्ण रावणकै भाई।

ताहि निपात कीन्ह कपिराई।41।

मेघनाद संग्रामहिं मारा।

पवन तनय सम को बरियारा।42।

मुरहातनय नरांतक नामा।

पलमँह ताहि हता हनुमाना।43।

जहँ लगि नाम दनुज कर पावा।

शम्भुतनय तहँ मारि खसावा।44।

जय मारुतसुत जन अनुकूला।

नाम कृसान शोक सम तूला।45।

जेहि जीवनकँह संकट होई।

रविसमान तम संकट खोई।46।

बन्दि परे सुमिरै हनुमाना।

गदाचक्र लै चलु बलवाना।47।

जम कँह मारि बाम दिसि दीन्हा।

मृत्युहिं बांधि हाल बहु कीन्हा।48।

सो भुजबल का कीन कृपाला।

अछत तुम्हार मोरि यह हाला।49।

आरति हरन नाम हनुमाना।

सारद-सुरपति कीन्ह बखाना।50।

रहै न संकट एक रती को।

ध्यान धरै हनुमान यती को।51।

धावहु देखि दीनता मोरी।

मेटहु बन्दि कहहुँ कर जोरि।52।

कपिपति बेगि अनुग्रह करहु।

आतुर आइ दास-दुःख हरहु।53।

रामशपथ मैं तुमहिं धरावा।

जो न गुहार लागि सिव-जावा।54।

बिरद तुम्हारि सकल जग जाना।

भव भय भंजन तुम हनुमाना।55।

यंहि बंधन करि के तिल बाता।

नाम तुम्हार जगत सुखदाता।56।

करहु कृपा जयजय जगस्वामी।

बार अनेक नमामि नमामि।57।

भौमवार करि होम विधाना।

धूपदीप नैवेद्य सजाना।58।

मंगलदायक को लौ लावै।

सुरनर मुनि तुरतहिं फल पावै।59।

जयति जयति जयजय जगस्वामी।

समरथ सब जग अन्तरयामी।60।

अंजनितनय नाम हनुमाना।

सो तुलसी कँह कृपानिधाना।61।

।दोहा।

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान।

रामलखन सीता सहित, सदा करो कल्याण।।

जो यह साठिक पढ़इ नित, तुलसी कँह बिचारि।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

पड़ै न संकट ताहि कौ, साखि हैं त्रिपुरारि।।

।सवैया।

आरत बन पुकरात हौं कपिनाथ सुनो विनती मम भारी।

अंगद औ नलनील महाबलि देव सदा बल की बलिहारी।।

जाम्बवन्त सुग्रीव पवनसुत दिबिद मंयद महाभटभारी।

दुःख दोष हरो तुलसी जन को श्रीद्वादश बीरन की बलिहारी।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413

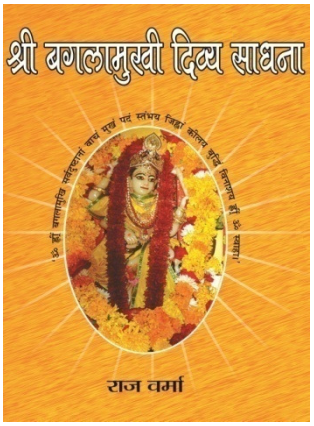

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933 -- 07500292413